Shodh ManthanVol. XVII Special Issue Jan.2026 ISSN: (P)0976-5255(e)2454-339X, Impact Factor 8.889 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17SI01.08

प्रेमचंदोत्तर कहानी का विकास एवं प्रमुख आँचलिक कहानियाँ

08

रमेश कुमार यादव
सहायक आचार्य, (हिन्दी विभाग)
राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय सिंगरामऊ, जौनपुर
ईमेलः rkyadavhindi22@gmail.com

सारांश

कहानी, साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है। किस्सागोई प्राचीन काल से ही मानव समाज के अभिन्न हिस्से के रूप में प्रचलित रही है। भारतीय समाज भी इससे अछूता नहीं रहा। भारत में कहानियों की बहुत प्राचीन परंपरा रही है। हितोपदेश और पंचतंत्र की कहानियाँ भारत में प्राचीनकाल से ही प्रचलित थीं। दादा–दादी, नाना– नानी की कहानियाँ बहुत पहले से ही प्रचलित हैं। छोटे बच्चों से वार्तालाप का प्रमुख माध्यम किस्से–कहानियाँ ही होती हैं। कहानियाँ जब लेखन में आयीं तब कौतूहल व मनोरंजन के प्रमुख साधन के रूप में शुरू हुईं। जैसे–जैसे सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ बदलती गईं, कहानी का स्वरुप भी बदलता गया। हिंदी साहित्य में प्रेमचंद पहले ऐसे कथाकार हैं जिन्होंने साहित्य को मनोरंजन व कोरा उपदेश से अलग कर यथार्थ से जोड़ने का कार्य किया। कालांतर में कहानी मानव जीवन के यथार्थ का उद्घाटन करने वाली सशक्त विधा बनकर उभरी। उपनिवेशवाद, राष्ट्रवादी आंदोलन, स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक–राजनीतिक परिस्थितियाँ, औद्योगीकरण व आधुनिकता ने जन–जीवन को प्रभावित किया। फलस्वरूप कहानी के कलेवर में भी तेजी से बदलाव आता गया।

मुख्य शब्द

कहानी, कहानी आन्दोलन, समाज, सामाजिक, प्रेमचंद, परिस्थितियाँ, आँचलिकता, कथ्य और शिल्प।

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में कहानी का स्वरूप प्रारंभिक अवस्था से लेकर अब तक बदलता रहा है। आज हिंदी कहानी की विकास यात्रा बहुत लंबी है। इस यात्रा का व्यवस्थित आँकलन करने के लिए इसे विभिन्न चरणों में बाँटना उचित होगा। प्रेमचंद ने लगभग तीन सौ कहानियाँ लिखीं। प्रेमचन्द हिंदी कहानी की विकास यात्रा में मील के पत्थर के सामान हैं। इसलिए हिंदी कहानी के इतिहास में प्रेमचंद को केंद्र में रखते हुए इसे निम्नलिखित चरणों में विभक्त किया जा सकता है–

1. प्रेमचंद पूर्व कहानी (सन् 1900 ई.–1914 ई.)
2. प्रेमचन्दयुगीन कहानी (सन् 1915 ई.–1936 ई.)
3. प्रेमचंदोत्तर कहानी (सन् 1936 ई.–1950 ई.)

प्रेमचंदोत्तर कहानी

हिंदी साहित्य में सन् 1936 से लेकर 1950 ई. तक की रचित कहानियाँ प्रेमचंदोत्तर युग के अंतर्गत आती हैं। समय के साथ देश में राजनीतिक, सामाजिक चेतना का स्वरुप भी बदलता गया। उद्योग–धंधों ने शहरीकरण को बढ़ावा दिया। शिक्षा के पश्चिमीकरण के कारण आयी आधुनिकता ने पुरानी मान्यताओं एवं रुढियों को नकारना शुरू किया। सामाजिक, पारिवारिक मूल्यों में बदलाव आ गए। कथा साहित्य ने भी विभिन्न बदलाओं को अपने में समाहित करते हुए अपना रचना संसार बनाया। प्रेमचंद के बाद कथ्य और शिल्प के स्तर पर स्पष्ट बदलाव देखा जा सकता है। हिंदी कथा साहित्य पश्चिमी साहित्य के सामाजिक, वैचारिक आन्दोलनों जैसे– मनोविश्लेषणवाद और साम्यवाद से प्रभावित होकर अपने आपको विश्व के बौद्धिक फलक के साथ जोड़ता है।

इस युग में पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्र में तीव्र बदलाव के कारण कहानियाँ भी बहुआयामी और विविध विषयी थीं। आगे चलकर विभिन्न कहानी आंदोलनों ने भी इस वैविध्यता को बढ़ाया। इसीलिए प्रेमचंदोत्तर युगीन कहानी को निम्नलिखित रूप से उप विभाजित किया जा सकता है–

क) मनोविश्लेषणवादी कहानी
ख) प्रगततिवादी कहानी
ग) नई कहानी
घ) साठोत्तरी कहानी

ङ) सचेतन कहानी

च) समकालीन कहानी

छ) समानांतर कहानी

ज) जनवादी कहानी

मनोविश्लेषणवादी लेखकों में जैनेन्द्र, अज्ञेय और इलाचन्द्र जोशी प्रमुख हैं। प्रेमचंद युग में ही **जैनेंद्र** एक प्रमुख कथाकार बनकर उभरे। उन्होंने कहानियों को घटना से उठाकर चरित्र निर्माण एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर लाने का प्रयास किया। उनकी कहानी हत्या, खेल, अपना अपना भाग्य, बाहुबली, वातायन, नीलम देश की राजकन्या, दो चिड़िया, जाह्नवी, पत्नी, परख, ग्रामोफोन का रिकॉर्ड, ध्रुवयात्रा, पाजेब, एक दिन, पानवाला आदि प्रमुख हैं। इन कहानियों में जैनेंद्र ने व्यक्त के मन की इच्छाओं, उनके जेहन में उठने वाले प्रश्नों और मानसिक उलझनों का अंकन किया है। **अज्ञेय** की कहानियों में मनोविश्लेषण के साथ–साथ प्रतीक एवं बौद्धिकता का असर भी दिखाई देता है। अज्ञेय ने प्रतीक एवं बिम्बों के माध्यम से कहानियों को बौद्धिक एवं वैचारिक आधार प्रदान किया। इनकी कुछ प्रसिद्ध कहानी रोज, खेतीन बाबू, अमरवल्लरी, पगोडावृक्ष, हरसिंगार, पुलिस की सीटी, हजामत का साबुन, विपथगा, शरणार्थी, कोठारी की बात, पत्थर का धीरज, चिड़ियाघर, जिजीविशा, पहाड़ी जीवन आदि हैं। *जैनेन्द्र और अज्ञेय हैं जो यथार्थ के चित्रण में उतनी रूचि नहीं रखते जितन उसकी तह तक जाने में उसकी कोशिश है। मनोविज्ञान से आगे वे मनोविश्लेषण में पैठते हैं, पर जीवन के संश्लिष्ट चित्रण को बाधित नहीं होने देते।"1*

मनोविश्लेषणवादी परंपरा के एक और प्रमुख कथाकार हैं– **इलाचंद्र जोशी**। इनकी कहानियों में कुंठा, दमित कामवासनाओं एवं व्यक्ति के अहं का चित्रण है। इन कहानियों में घटनाओं की अपेक्षा चरित्र पर विशेष बल दिया गया है। जोशी जी की प्रमुख कहानी प्रतियोगिता, चौथे विवाह की पत्नी, मिस्त्री, रोगी, परमात्मा, खंडहर की आत्माएं ,डायरी के नीरस पृष्ठ, आहट, दीवाली, कंटीले फूल लजीले कांटे, धूपरेखा इत्यादि हैं।

प्रगतितिवादी कथाकारों में **यशपाल** का नाम सर्वोपरि है, जिन्होंने मार्क्सवादी चेतना से प्रेरित होकर कहानियों की रचना की है। 'पिंजरे की उड़ान' और 'वह दुनिया' नामक कहानी संग्रह में उनके जीवन काल में जेल में लिखी गई कहानियाँ संकलित है। *ये कहानियाँ किसी तीखे वैचारिक संघर्ष की कहानी न होकर, जो आगे चलकर यशपाल की विशेष पहचान बनी, मुख्यतः मनः स्थितियों की कहानी है।' 2* इनकी प्रमुख कहानियाँ मक्रील, नीरस रसिक, वो दुनिया, कुत्ते की पूंछ, परदा, अस्सी बटा सौ, सच बोलने की भूल, खच्चर और आदमी, भूख के तीन दिन, पतिव्रता, करवा का व्रत, पाप का कीचड़, तर्क का तूफान, फूलों का कुर्ता, चक्कर क्लब, तुमने क्यों कहा मैं सुंदर हूँ आदि हैं। भैरव प्रसाद गुप्त और अमृतराय की कहानियों में मार्क्सवादी विचारधारा मिलती है। एक सांवली लड़की, हजार मन राख और एक मन चिंगारी, गीली मिट्टी, एक गुमनाम आदमी, तिरंगा कफन आदि **अमृतराय** की प्रमुख कहानियाँ है जिनमें सर्वहारा और निम्नवर्ग के प्रति सहानुभूति एवं अन्याय के प्रति आक्रोश और घृणा दिखाई पड़ती है। आह्वान, समय, चित्रफ़लक भी इनकी महत्वपूर्ण कहानियाँ हैं। **भैरव प्रसाद गुप्त** की प्रमुख कहानियाँ सपने का अंत, सिविल लाइन का कमरा, फंदा, इंसान और मक्खियाँ, ऐसी आजादी रोज–रोज हो, चाय का प्याला हैं।

प्रेमचंदोत्तर कहानीकारों में **अमृतलाल नागर** का नाम भी प्रमुखता से लिया जाता है। इनकी प्रमुख कहानी लंगूर का बच्चा, दो आस्थाएं, आदमी, नहीं! नहीं!!, मरघट के कुत्ते, तुलाराम शास्त्री, मल्का टूरिया का बेटा आदि उल्लेखनीय हैं। सामाजिक धार्मिक रूढ़ियों और अंधविश्वासों का विरोध, हास्य व्यंग के पुट के साथ मध्यमवर्गीय जीवन को इन कहानियों में अंकित किया गया है। प्रेमचंदोत्तर कहानीकारों में एक महिला कथाकार **चंद्रकिरण सौनरेक्सा** का नाम उल्लेखनीय है। इनकी प्रमुख कहानी आदमखोर, कवयित्री, नासमझ, बर्थडे, आत्महंता, साइकिल, बड़े कमीन छोटे कमीन आदि है। इनकी कहानियों में मध्य और उच्च वर्ग की सोच में विसंगतियों और निम्नवर्ग का शोषण, स्त्री और पुरुष की स्थिति को विषय बनाया गया है।

प्रेमचंदोत्तर युग में हिंदी कहानी में ऐसे कई लेखक (राहुल सांकृत्यायन, भगवत षरण उपाध्याय, भगवती प्रसाद वाजपेयी आदि) आए जिनकी केंद्रीय प्रवृत्ति कहानी विधा नहीं थी। **राहुल सांकृत्यायन** का कहानी संग्रह वोल्गा से गंगा 1942 ई. में प्रकाशित हुआ जो इनकी प्रसिद्धि का आधार है। इन कहानियों में आर्थिक विषमता एवं समाज की तत्कालीन परिस्थितियों का चित्रण हुआ है। भगवती प्रसाद वाजपेयी की कहानी 'निंदिया लागी' और 'मिठाईवाला' कहानी में साधारण, मध्यम एवं निम्नवर्गीय जीवन का अंकन किया है।

नई कहानी

अज़ादी के बाद देशवासियों को सरकर से बहुत उम्मीदें हो गईं। उन्हें यह विश्वास था कि हमारी सामाजिक आर्थिक स्थितियों में अब बदलाव आ जाएगा। यद्यपि आज़ादी के बाद सरकर ने लोक कल्याणकारी कार्य भी किए लेकिन वे नाकाफी थे। राजनीतिक पार्टियों में सामंतवादी एवं शोषणकारी चरित्र तेजी से उभर कर सामने आया। नौकरशाही में भ्रष्टाचार चरम पर था। एक तरफ गरीबी, भुखमरी चरम पर थी, तो दूसरी तरफ लूट–खसोट और अत्याचार करने वाले भी अधिक थे। ऐसे में साहित्य भी पूर्वाग्रह से मुक्त हो प्रामाणिक यथार्थ की अभिव्यक्ति करने लगा। सन 1950 के बाद की कहानी, अपने कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से पूर्ववर्ती कहानियों से अलग रही है। *नई कहानी आन्दोलन नयी कविता के सादृश्य पर 1956 ई. के आस–पास आयोजित होता है। मुख्य रूप से तीन कथाकार मोहन राकेश, राजेंद्र यादव और कमलेश्वर, एक आलोचक नामवर सिंह, और कहानी–पत्रिकाओं के एक संपादक भैरव प्रकाश गुप्त के रचनात्मक तथा वैचारिक सहयोग से कहानी के क्षेत्र में नयी जागृति आती है।' 3*

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17SI01.08

मानव जीवन को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने का प्रयास नई कहानी ने किया। नई कहानी में जीवन की यथार्थता को ईमानदारी के साथ चित्रित किया गया है। यद्यपि कहानियों में कल्पना का तत्व मौजूद रहता है, फिर भी ये कहानियाँ आस–पास के जीवन की कहानी सी प्रतीत होती हैं। मोहन राकेश, राजेंद्र यादव और कमलेश्वर के अलावा अन्य प्रमुख कहानीकार धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा, अमरकांत, मारकंडेय, भीष्म साहनी, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, श्रीकांत वर्मा, राजकमल चौधरी आदि हैं।

नई कहानी के लेखक और उनकी कहानियाँ निम्नलिखित हैं–

राजेन्द्र यादव की देवताओं की मूर्तियाँ, खेल–खिलौने, साइकिल, नास्तिक, जहां लक्ष्मी कैद है, अभिमन्यु की आत्महत्या, छोटे–छोटे ताजमहल, किनारे से किनारे तक, टूटना, बिरादरी–बाहर, कलाकार आदि महत्वपूर्ण कहानियाँ हैं। *'राजेंद्र यादव की कहानियों में आधुनिकता भावबोध को व्यापक सामाजिकता से संदर्भित करने की कोशिश मिलती है। उन्होंने निर्वैयक्तिकता पर विशेष बल दिया है और एक सामानांतर दुनिया बनाने की कोशिश की है।' 4* **मोहन राकेश** ने इंसान के खंडहर, उर्मिल जीवन, दोहरा, धुंधला द्वीप, क्वार्टर, एक और जिंदगी, ठहरा हुआ चाकू, आखरी सामान, मिस पॉल, सुहागिनें, मलबे का मालिक, परमात्मा का कुत्ता आदि कई कहानियाँ लिखी। मोहन राकेश की कहानियों में सामाजिक व वैयक्तिक तनाव, आधुनिक व पुरातन के द्वंद्व, नगरीय परिवेश के साथ आधुनिकता बोध के चित्र मिलते हैं। कमलेश्वर की प्रमुख कहानियाँ राजा निरबंसिया, कस्बे का मालिक, भटके हुए लोग, खोई हुई दिशाएँ, एक थी विमला, मांस का दरिया, नीली झील, जॉर्ज पंचम की नाक, लाश, सीखचें आदि हैं।

निर्मल वर्मा शहरी परिवेश के व्यक्ति थे। उनकी कहानियों में शहरी परिवेश और आत्मकेंद्रित पात्र अधिक हैं। परिंदे, सूखा, चीड़ों पर चांदनी, अंधेरे में, जलती झाड़ी, कौवे और काला पानी, डेढ़ इंच ऊपर धूप का एक टुकड़ा लंदन की एक रात, अंतर आदि। **मन्नू भंडारी** के कथा संग्रह 'मैं हार गई', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर' और 'यही सच है' हैं। मन्नू भंडारी ने अपनी कहानियों में स्त्री के मन मनोभाव और स्त्रियों के प्रति पुरुषों के मन की शंका ईर्ष्या आदि को अपनी कहानियों का विषय बनाया है। कृष्णा सोबती ऐसी कथाकार हैं जिन्होंने प्रेम और स्त्री–पुरूष संबंधों पर आधारित कहानी (बादलों के घेरे, दोहरी सांझ, पहाड़ों के साये तले, तिन पहाड़, मित्रो मरजानी आदि) स्त्री संघर्ष की कहानी (गुलाबजल गड़ेरियाँ, बदली बरस गई, आज़ादी शम्मोजान, ये लड़की) विभाजन का दर्द व क्षेत्र विशेष के प्रति लगाव की कहानी (डरो मत, सिक्का बदल गया, मेरी मां कहांकृ, मैं तुम्हारी रक्षा करूंगी) की रचना की है। **उषा प्रियंवदा** की कहानियों में आधुनिकता बोध झलकता है। जिंदगी और गुलाब के फूल, एक कोई दूसरा इनके कहानी संग्रह हैं। इनकी प्रमुख कहानियाँ वापसी, छुट्टी का दिन, कंटीली छाँह, कच्चे धागे, झूठा दर्पण, कोई नहीं, चांदनी में बर्फ, टूटे हुए, सागर पार का संगीत, ट्रिप आदि हैं।

सचेतन कहानी आन्दोलन की शुरुआत **डॉ. महीप सिंह** ने 1960 के दशक में किया था। यह आन्दोलन नई कहानी के विरोध के रूप में हुआ था। इस आन्दोलन का उद्देश्य जीवन में सक्रियता और चेतना का संचार करना था। महीप सिंह की कहानी कील, कछुए, युद्धमन, पार–दर्शक, स्वराघात। इनकी कहानियाँ निम्नमध्यम एवं मध्यमवर्गीय जीवन पर केंद्रित हैं। मनहर चौहान (घरघुसरा, बीस सुबहों के बाद), योगेश गुप्त (इनक्लोजर, चितकोबरा, बहुत सारी बातें, भीड़ नम्बर दो), कुलभूषण (पहली सीढ़ी) इस धारा के प्रभावित अन्य प्रमुख लेखक हैं।

अकहानी आन्दोलन सचेतन कहानी आन्दोलन के तुरंत बाद या कहें कि सचेतन कहानी आन्दोलन की समाप्ति के पहले ही शुरू हो गया। इस आन्दोलन के सूत्राधार डॉ. गंगा प्रसाद विमल थे। यह आन्दोलन कहानी के स्थापित मानदंडों को खारिज करता है तथा किसी भी प्रकार के वैचारिक या मूल्य स्थापना का विरोध करता है। अकहानी में आत्मपीड़ा, संघर्ष, अकेलेपन, अजनबीपन तथा विद्रोह की भावना का चित्रण मिलता है। पिता (ज्ञानरंजन), पिता दर पिता (रमेश बक्षी), शीर्षकहीन, बीच की दरार, झूठ, विध्वंस (गंगा प्रसाद विमल), सुखांत, सपाट चेहरे वाला आदमी, रक्तपात, रीछ (दूधनाथ सिंह), कील (महीप सिंह), लिपस्टिक (आनंद प्रकाश जैन), मैं, बड़े शहर का आदमी, पचास सौ पचपन (रवींद्र कालिया), अग्निस्तान, मछली जाल, झील (राजकमल चौधरी), उदास गुलमोहर, इतिहासहंता, अधखिले गुलाब, निहंग (जगदीश चतुर्वेदी) आदि इस धारा की प्रमुख कहानियाँ हैं।

सामानांतर कहानी आन्दोलन की शुरुआत कमलेश्वर ने सन 1971 ई. में की थी। इस कहानी आन्दोलन का उद्देश्य आम आदमी के जीवन और उनके संघर्ष को केंद्र में लाना था। यह आम आदमी सर्वहारा वर्ग का विस्तृत रूप है। बदनाम बस्ती, मांस का दरिया (कमलेश्वर), उसका विद्रोह (मृदुला गर्ग), शाहदतनामा (जितेंद्र भाटिया), बहुत बड़ी लड़ाई, दिग्भ्रमित (इब्राहिम शरीफ), श्मशान, कन्फेशन (दामोदर सदन), अँधेरे का सैलाब (सेवा राम यात्री), तमाशा, जयहिंद, एक बार फिर (स्वदेश दीपक), तलाश के बाद , चुनौती, दंशित, आतंकबीज़ (निरुपमा सेवती), बगैर तराशे हुए, मरी हुई चीज, आग (सुधा अरोड़ा) आदि प्रतिनिधि समानांतर कहानियाँ हैं।

जीवन की सहज अभिव्यक्ति के चित्रण के उद्देश्य से **सहज कहानी** आन्दोलन शुरू हुआ था। इस आन्दोलन के प्रवर्तक अमृतराय हैं। यह आन्दोलन नई कहानी के बाद 1968 ई. में शुरू हुआ था।

जनवादी लेखक संघ की स्थापना 1982 ई. में हुई थी। जनवादी कहानी आंदोलन का आधार व्यापक है। उसमें सर्वहारा की चिंता से आगे जाकर उन सारे लोगों को चिंता को केंद्र में लाता है, जो सामाजिक स्थितियों में बदलाव की इच्छा रखते हैं। *'जनवाद एक व्यापक जन समूह का स्टैंड पॉइंट है, दृष्टिकोण है, जिसमें कि राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग से लेकर मजदूर–किसान सब आते हैं, उनके हितों से जुड़ा हुआ वह दृष्टिकोण है . कृ।" 5*

इस समय की प्रमुख कहानियाँ तमगे, मुर्गी की कीमत, फूला, रानी मेहती, ललिता **(भीष्म साहनी)**, जिंदगी और जोंक, गले की जंजीर, पलाश के फूल, छिपकली, देश के लोग **(अमरकांत)**, पान फूल, गुलरा के बाबा **(मार्कण्डेय)**, कोशी का घटवार, दाज्यू, उस्ताद, बदबू **(शेखर जोशी)**, पिता, दांपत्य, हास्यरस, यात्रा **(ज्ञानरंजन)**, लाल किले के बाज, बैल, सुधीर घोषाल, अधूरा आदमी **(काशीनाथ सिंह)**, युद्ध, अर्थतंत्र, सड़क, पुल **(सतीश जमाली)**, रोजनामचा, रात बाकी थी, मुस्कान, लोग जिंदा हैं **(इसराइल)**, भगोड़े, पूरा सन्नाटा, अगुन कापड़ **(मधुकर सिंह)**, जमी हुई झील, कामधेनु, अग्निसंभवा, दूसरी आज़ादी **(रमेश उपाध्याय)**, ब्रह्मफांस, राह, जाग **(विजयकांत)** हैं।

आँचलिक कहानियाँ

हिंदी कथा साहित्य में आँचलिक शब्द का प्रचलन फणीश्वर नाथ रेणु के उपन्यास मैला आँचल से हुआ। अंचल शब्द से आशय है–ऐसे क्षेत्र विशेष से है जिसकी अपनी विशेष भौगोलिक स्थिति हो, संस्कृति हो, भाषा हो। अंचल विशेष की अपनी विशेष प्रकृति और सामाजिकता होती है। आँचलिक कहानियाँ अपने कथानक, घटनाओं, भाषा शैली, कथोपकथन में अन्य कहानियों से अलग हो जाती हैं। इन कहनियों में क्षेत्र, जाति विशेष का जन– जीवन एवं उनकी संस्कृति पूर्ण रूप में सामने उभर कर आ जाती है। अधिकतर आँचलिक कहानियां सुदूर ग्रामीण, पहाड़ी, आदिवासी क्षेत्र के पिछड़ेपन व संघर्ष को दर्शाती हैं।

यद्यपि प्रेमचंद के समय से ही गांव कहानियों में नजर आता है परंतु इन कहानियों में मूलत ग्रामीण समस्याओं को उभारा गया है। इन कहानियों में लोक जीवन, लोक भाषा का अभाव है। आँचलिक कहानियों का परिवेश शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में मिलता है। आगे चलकर फणीश्वर नाथ रेणु, मार्कण्डेय, शैलेश मटियानी, राजेंद्र अवस्थी, शेखर जोशी जैसे कथाकारों ने आँचलिक कहानियों के लेखन को समृद्ध किया।

कर्मनाशा की हार, गंगा तुलसी, माटी की औलाद, गुलरा के बाबा , सपेरा, भाटी की औलाद, बरगद के पेड़ आदि **शिवप्रसाद सिंह** की कहानियां हैं। इन कहानियों में उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल के गांव का यथार्थ अंकन मिलता है। **फणीश्वर नाथ रेणु** की कहानी भित्ति चित्र की मयूरी, तीसरी कसम, रसप्रिया, एक आदिम रात्रि की महक, ठेस, लालटेन की बेगम आदि कहानियों में आँचलिक परिवेश जीवित पात्र की तरह उपस्थित है। *"रेणु की कहानियों का संसार मुख्यतः ऐसे लोगों से निर्मित है जो भारतीय ग्राम जीवन के प्रति किसी हद तक रोमानी मोह से ग्रस्त हैं और जिन्हें गाँवों का सांस्कृतिक एवं लोक तात्विक वैभव बहुत गहरे से छूता और बांधता है।" 6* **मार्कण्डेय** ग्रामीण कहानियों के सूत्रधार बनकर उभरे और ग्राम कथानक और संस्कृति को अपनी कहानियों में जगह दी। गूलर के बाबा, सबरइया, पान–फूल, गोरा, सात बच्चों की मां, नीम की टहनी, महुआ का पेड़, हंसा जाइ अकेला आदि इनकी महत्वपूर्ण कहानियां हैं। **राजेन्द्र अवस्थी** ने अपनी आँचलिक कहानियों में यथार्थ को अंकित किया है। लाल झंडा, महुआ आम के जंगल, जलता सूरज, जड़बंधन, कगार का पानी माया माटी और मानव आदि इनकी प्रमुख कहानियाँ हैं।

पोस्टमैन, प्यास और पत्थर, चील, भविश्य, मिट्टी, डब्बू मलंग आदि **शैलेश मटियानी** की प्रतिनिधि कहानियाँ हैं। इन कहानियों में उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्र कुमायूं के समाज संस्कृति और जीवन का चित्रण किया गया है। कोसी का घटवार, गलता लोहा, दाज्यू, पद्मा की कहानी आदि कहनियाँ **शेखर जोशी** की आँचलिक विशेषता को लिए हुए कहानियां हैं। इन कहानियों में जोशी जी ने उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्र के संस्कृति, परंपरा और जीवन शैली को चित्रित किया है।

प्रेमचंद और फणीश्वर नाथ रेणु की परंपरा (ग्रामीण संवेदना और आँचलिकता दोनों का मेल) का निर्वहन **शिवमूर्ति** जी ने किया है। उनकी कहानियों में ग्रामीण परिवेश भाषा शैली लोक जीवन यथार्थ रूप में प्रकट होता है। सिरी उपमा जोग, केशर कस्तूरी, कुच्ची का कानून, ख्वाजा ओ मेरे पीर, तिरियाचरित्तर आदि कहानियों के माध्यम से अवध के क्षेत्र विशेष के गाँव, संस्कृति व संघर्ष को दर्शाया गया है।

निष्कर्ष–

इस प्रकार हिंदी साहित्य में कहानी ने अपने उद्भव से लेकर अब तक के लगभग 125 वर्षों का लम्बा सफ़र तय किया है। इस दौरान कहानियों के स्वरुप में लगातार बदलाव आता रहा है। हिंदी कहानी में वस्तु और शिल्प दोनों स्तर पर व्यापकता और विविधता आई। आज कहानी, हिंदी साहित्य की सबसे लोकप्रिय व सफल विधा के रूप में प्रतिष्ठित है।

सन्दर्भ

1. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, सोलहवाँ संस्करण 2002, पृ0सं0–216
2. मधुरेश, हिंदी कहानी का विकास, सुमित प्रकाशन– इलाहाबाद, नवम संस्करण–2018, पृ0सं0–47
3. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, सोलहवाँ संस्करण 2002, पृ0सं0–250
4. डॉ. नगेन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स नोयडा, 46वाँ/47वाँ पुनर्मुद्रण संस्करण 2014, पृ0सं0–731
5. मधुरेश, हिंदी कहानी का विकास, सुमित प्रकाशन इलाहाबाद, नवम संस्करण 2018, पृ0सं0–150
6. मधुरेश, हिंदी कहानी का विकास, सुमित प्रकाशन इलाहाबाद, नवम संस्करण 2018, पृ0सं0–89